8 रवीन्द्रनाथ टैगोर

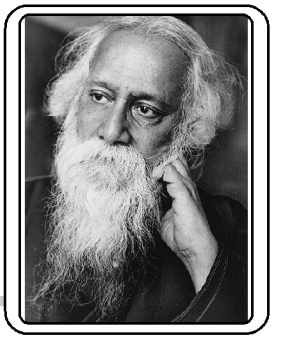

जीवन परिचय–रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 ई0 को कलकत्ता (कोलकाता) में हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। ग्यारह वर्ष की उम्र में उपनयन संस्कार के बाद अपने पिता देवेन्द्रनाथ के साथ हिमालय-यात्रा पर निकले थे। सितम्बर 1877 ई0 में अपने भाई के साथ इंग्लैण्ड चले गये। वहाँ इन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन करते हुए पश्चिमी संगीत सीखा। इंग्लैण्ड से वापस लौटकर इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। 1914 ई0 में कोलकाता विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें 'डॉक्टर' की मानद उपाधि प्रदान की गयी। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा भी इन्हें 'डी-लिट्' की उपाधि दी गयी।

इनका निधन 7 अगस्त, 1941 ई0 को हुआ।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–7 मई, सन् 1861 ई0।
- **पिता**–देवेन्द्रनाथ टैगोर।
- **जन्म-स्थान**–कलकत्ता (कोलकाता)।
- **मृत्यु**–7 अगस्त, सन् 1941 ई0।
- **पुरस्कार**–नोबल पुरस्कार (1913 ई0)।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**–कथाकार, नाटककार, निबन्धकार एवं कवि के रूप में।

साहित्यिक परिचय–रवीन्द्रनाथ टैगोर हमारे देश के एक प्रसिद्ध कवि, देशभक्त तथा दार्शनिक थे। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक तथा कविताओं की रचना की। इन्होंने अपनी स्वयं की कविताओं के लिए अत्यन्त कर्णप्रिय संगीत का सृजन किया। ये हमारे देश के एक महान चित्रकार तथा शिक्षाविद् थे। 1901 ई0 में इन्होंने शान्ति निकेतन में एक ललित कला स्कूल की स्थापना की, जिसने कालान्तर में विश्व भारती का रूप ग्रहण किया। यह एक ऐसा विश्वविद्यालय रहा जिसमें सारे विश्व की रुचियों तथा महान आदर्शों को स्थान मिला तथा भिन्न-भिन्न सभ्यताओं एवं परम्पराओं के व्यक्तियों को साथ जीवन-यापन करने की शिक्षा प्राप्त हो सकी।

सर्वप्रथम टैगोर ने अपनी मातृभाषा बंगला में अपनी कृतियों की रचना की। जब इन्होंने अपनी रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी में किया तो इन्हें सारे संसार में बहुत ख्याति प्राप्त हुई। 1913 ई0 में इन्हें नोबल पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, जो इनकी अमर कृति 'गीतांजलि' के लिए दिया गया। 'गीतांजलि' का अर्थ होता है गीतों की अंजलि अथवा गीतों की भेंट। यह रचना इनकी कविताओं का मुक्त काव्य में अनुवाद है जो स्वयं टैगोर ने मौलिक बंगला से किया तथा यह प्रसिद्ध आयरिश कवि डब्ल्यू. बी. येट्स के प्राक्कथन के साथ प्रकाशित हुई। यह रचना भक्ति गीतों की है, उन प्रार्थनाओं का संकलन है जो टैगोर ने परम पिता परमेश्वर के प्रति अर्पित की थी।

ब्रिटिश सरकार द्वारा टैगोर को 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया गया परन्तु इन्होंने 1919 ई0 में जलियाँवाला नरसंहार के प्रतिकारस्वरूप इस सम्मान का परित्याग कर दिया।

टैगोर की कविता गहन धार्मिक भावना, देशभक्ति और अपने देशवासियों के प्रति प्रेम से ओत-प्रोत है। टैगोर सारे संसार में अतिप्रसिद्ध तथा सम्मानित भारतीयों में से एक हैं। हम इन्हें अत्यधिक सम्मानपूर्वक 'गुरुदेव' कहकर सम्बोधित करते हैं। यह एक विचारक, अध्यापक तथा संगीतज्ञ रहे। इन्होंने अपने स्वयं के गीतों को संगीत दिया, उनका गायन किया और अपने अनेक रंगकर्मी शिष्यों को शिक्षित करने के साथ ही अपने नाटकों में अभिनय भी किया। आज के संगीत जगत में इनके रवीन्द्र संगीत को अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

टैगोर एक गहरे धार्मिक व्यक्ति थे लेकिन अपने धर्म को 'मानव का धर्म' के नाम से वर्णित करना पसन्द करते थे। यह पूर्ण स्वतन्त्रता के प्रेमी थे। इन्होंने अपने शिष्यों के मस्तिष्क में सच्चाई का भाव भरा। प्रकृति, संगीत तथा कविता के निकट सम्पर्क के माध्यम से इन्होंने स्वयं अपनी तथा अपने शिष्यों की कल्पना-शक्ति को सौन्दर्य, अच्छाई तथा विस्तृत सहानुभूति के प्रति जाग्रत किया।

रचनायें–

कविताएँ– दूज का चाँद, भारत का राष्ट्रगान (जन-गण-मन), बागवान, मानसी, सोनार तारी, गीतांजलि, गीतिमय, बलक आदि।

कहानी– हंगरी स्टोन्स, काबुलीवाला, माई लॉर्ड, दी बेबी, नयनजोड़ के बाबू, भिखारिन, जिन्दा अथवा मुर्दा, अनधिकार प्रवेश, घर वापिसी, मास्टर साहब और पोस्टमास्टर।

उपन्यास– गोरा, नाव दुर्घटना, दि होम एण्ड दी वर्ल्ड, आँख की किरकिरी, राजर्षि, चोखेरवाली।

नाटक– पोस्ट ऑफिस, बलिदान, प्रकृति का प्रतिशोध, मुक्तधारा, नातिर-पूजा, चाण्डालिका, फाल्गुनी, वाल्मीकि प्रतिभा, राजा और रानी, रुद्रचण्ड, विसर्जन, चित्रांगदा।

आत्मजीवन चरित – मेरे बचपन के दिन।

निबन्ध व भाषण – मानवता की आवाज।

भाषा-शैली–इनकी भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावशाली है। यह अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, इसीलिये इनकी रचनाओं में कई भाषाओं के शब्द मिलते हैं। विषय और प्रसंग के अनुरूप इन्होंने परिचयात्मक, विवेचनात्मक, आत्मकथात्मक, निबन्धात्मक आदि शैलियाँ अपनायी हैं।

●●●

तोता

(1)

एक था तोता। वह बड़ा मूर्ख था। गाता तो था, पर शास्त्र नहीं पढ़ता था। उछलता था, फुदकता था, उड़ता था, पर यह नहीं जानता था कि कायदा-कानून किसे कहते हैं।

राजा बोले, "ऐसा तोता किस काम का? इससे लाभ तो कोई नहीं, हानि जरूर है। जंगल के फल खा जाता है, जिससे राजा-मण्डी के फल-बाजार में टोटा पड़ जाता है।"

मंत्री को बुलाकर कहा, "इस तोते को शिक्षा दो।"

(2)

तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला।

पंडितों की बैठक हुई। विषय था, "उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?" बड़ा गहरा विचार हुआ।

सिद्धान्त ठहरा : तोता अपना घोंसला साधारण खर-पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया-सा पिंजरा बना दिया जाय।

राज-पण्डितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने-अपने घर गये।

(3)

सुनार बुलाया गया। वह सोने का पिंजरा तैयार करने में जुट पड़ा। पिंजरा ऐसा अनोखा बना कि उसे देखने के लिए देश-विदेश के लोग टूट पड़े। कोई कहता, "शिक्षा की तो इति हो गयी।" कोई कहता, "शिक्षा न भी हो तो क्या, पिंजरा तो बना। इस तोते का भी क्या नसीब है।"

सुनार को थैलियाँ भर-भरकर इनाम मिला। वह उसी घड़ी अपने घर की ओर रवाना हो गया।

पण्डित जी तोते को विद्या पढ़ाने बैठे। नस लेकर बोले, "यह काम थोड़ी पोथियों का नहीं है।"

राजा के भानजे ने सुना। उन्होंने उसी समय पोथी लिखने वालों को बुलवाया। पोथियों की नकल होने लगी। नकलों के और नकलों की नकलों के पहाड़ लग गये। जिसने भी देखा, उसने यही कहा कि "शाबाश! इतनी विद्या के धरने को जगह भी नहीं रहेगी।"

नकलनवीसों को लद्दू बैलों पर लाद-लादकर इनाम दिये गए। वे अपने-अपने घर की ओर दौड़ पड़े। उनकी दुनिया में तंगी का नाम-निशान भी बाकी न रहा।

दामी पिंजरे की देख-रेख में राजा के भानजे बहुत व्यस्त रहने लगे। इतने व्यस्त कि व्यस्तता की कोई सीमा न रही। मरम्मत के काम भी लगे ही रहते। फिर झाड़ू-पोंछ और पालिश की धूम भी मची ही रहती थी। जो ही देखता, यही कहता कि "उन्नति हो रही है।"

इन कामों पर अनेक-अनेक लोग लगाये गये और उनके कामों की देख-रेख करने पर और भी अनेक-अनेक लोग लगे। सब महीने-महीने मोटे-मोटे वेतन ले-लेकर बड़े-बड़े सन्दूक भरने लगे।

वे और उनके चचेरे-ममेरे-मौसेरे भाई-बंद बड़े प्रसन्न हुए और बड़े-बड़े कोठों-बालाखानों में मोटे-मोटे गद्दे बिछाकर बैठ गये।

(4)

संसार में और-और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज-खबर लेने वाला कोई नहीं है।

बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनाई पड़ रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, अगर सच-सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइये, पण्डितों को बुलाइये, नकलनवीसों को बुलाइये, मरम्मत करने वालों को और मरम्मत की देखभाल करने वालों को बुलाइये। निन्दकों को हलवे-माँड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसीलिए वे ऐसी ओछी बात करते हैं।"

जवाब सुनकर राजा ने पूरे मामले को भली-भाँति और साफ-साफ तौर से समझ लिया। भानजे के गले में तत्काल सोने के हार पहनाये गये।

(5)

राजा का मन हुआ कि एक बार चलकर अपनी आँखों से यह देखें कि शिक्षा कैसे धूमधड़ाके से और कैसी बगटुट तेजी के साथ चल रही है। सो, एक दिन वह अपने मुसाहबों, मुँहलगों, मित्रों और मन्त्रियों के साथ आप ही शिक्षा-शाला में आ धमके।

उनके पहुँचते ही ड्योढ़ी के पास शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे, खुरदक, नगाड़े, तुरहियाँ, भेरियाँ, दमामें, काँसे, बाँसुरियाँ, झाल, करताल, मृदंग, जगझम्प आदि-आदि आप ही आप बज उठे।

पण्डित गले फाड़-फाड़कर और बूटियाँ फड़का-फड़काकर मन्त्र-पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकलनवीस, देखभाल करने वाले और उन सभी के ममेरे, फुफेरे, चचेरे, मौसेरे भाई जय-जयकार करने लगे।

भानजा बोला, "महाराज, देख रहे हैं न?"

महाराज ने कहा, "आश्चर्य! शब्द तो कोई कम नहीं हो रहा!

भानजा बोला, "शब्द ही क्यों, इसके पीछे अर्थ भी कोई कम नहीं!" राजा प्रसन्न होकर लौट पड़े। ड्योढ़ी को पार करके हाथी पर सवार होने ही वाले थे कि पास के झुरमुट में छिपा बैठा निन्दक बोल उठा, "महाराज आपने तोते को देखा भी है?" राजा चौंके। बोले, "अरे हाँ! यह तो मैं बिलकुल भूल ही गया था। तोते को तो देखा ही नहीं।" लौटकर पण्डित से बोले, "मुझे यह देखना है कि तोते को तुम पढ़ाते किस ढंग से हो।" पढ़ाने का ढंग उन्हें दिखाया गया। देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। पढ़ाने का ढंग तोते की तुलना में इतना बड़ा था कि तोता दिखाई ही नहीं पड़ता था। राजा ने सोचा : अब तोते को देखने की जरूरत ही क्या है? उसे देखे बिना भी काम चल सकता है। राजा ने इतना तो अच्छी तरह समझ लिया कि बंदोबस्त में कहीं कोई भूल-चूक नहीं है। पिंजरे में दाना-पानी तो नहीं था, थी सिर्फ शिक्षा। यानी ढेर की ढेर पोथियों के ढेर के ढेर पन्ने फाड़-फाड़कर कलम की नोंक से तोते के मुँह में घुसेड़े जाते थे। गाना तो बन्द हो ही गया था, चीखने-चिल्लाने के लिए भी कोई गुंजायश नहीं छोड़ी गयी थी। तोते का मुँह ठसाठस भरकर बिलकुल बन्द हो गया था। देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते।

अब दुबारा जब राजा हाथी पर चढ़ने लगे तो उन्होंने कान-उमेठू सरदार को ताकीद कर दी कि "निन्दक के कान अच्छी तरह उमेठ देना।"

(6)

तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी-स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर-टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी-किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

कोतवाल गरजा, "यह कैसी बेअदबी है।"

फौरन लुहार हाजिर हुआ। आग, भाथी और हथौड़ा लेकर।

वह धम्माधम्म लोहा-पिटाई हुई कि कुछ न पूछिये! लोहे की सांकल तैयार की गई और तोते के डैने भी काट दिये गये।

राजा के सम्बन्धियों ने हाँड़ी-जैसे मुँह लटका कर और सिर हिलाकर कहा, "इस राज्य के पक्षी सिर्फ बेवकूफ ही नहीं, नमक-हराम भी हैं।" और तब, पण्डितों ने एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में बरछा ले-लेकर वह कांड रचाया, जिसे शिक्षा कहते हैं।

लुहार की लुहसार बेहद फैल गयी और लुहारिन के अंगों पर सोने के गहने शोभने लगे और कोतवाल की चतुराई देखकर राजा ने उसे सिरोपा अदा किया।

(7)

तोता मर गया। कब मरा, इसका निश्चय कोई भी नहीं कर सकता। कमबख्त निन्दक ने अफवाह फैलायी कि "तोता मर गया!"

राजा ने भानजे को बुलवाया और कहा, "भानजे साहब यह कैसी बात सुनी जा रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई है।"

राजा ने पूछा, "अब भी वह उछलता-फुदकता है?"

भानजा बोला, "अजी, राम कहिये!"

(8)

"अब भी उड़ता है?"
"ना; कतई नहीं।"
"अब भी गाता है?"
"नहीं तो।"
"दाना न मिलने पर अब भी चिल्लाता है?"
"ना!"
राजा ने कहा, "एक बार तोते को लाना तो सही, देखूँगा जरा!"
तोता लाया गया। साथ में कोतवाल आये, प्यादे आये, घुड़सवार आये।
राजा ने तोते को चुटकी से दबाया। तोते ने न हाँ की, न हूँ की। हाँ, उसके पेट में पोथियों के सूखे पत्ते खड़खड़ाने जरूर लगे।
बाहर नव-बसन्त की दक्षिणी बयार में नव-पल्लवों ने अपने निश्वासों से मुकुलित वन के आकाश को आकुल कर दिया।

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला। पण्डितों की बैठक हुई। विषय था, "उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?" बड़ा गहरा विचार हुआ। सिद्धान्त ठहरा : तोता अपना घोंसला साधारण खर-पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया-सा पिंजरा बना दिया जाय। राज-पण्डितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने-अपने घर गये।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) तोते को शिक्षा देने का काम किसे मिला?
(iv) तोता अपना घोंसला किससे बनाता है?
(v) दक्षिणा किसे मिली?

(ख) संसार में और-और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज-खबर कोई लेने वाला नहीं है।"
बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनायी पड़ रही है? भानजे ने कहा, "महाराज अगर सच-सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइए। निन्दकों को हलवे-माड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसलिए वे ऐसी ओछी बातें करते हैं।"

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) संसार में किसकी कमी नहीं है?
(iv) किसकी उन्नति हो रही है?
(v) निन्दक निन्दा क्यों करते हैं?

(ग) तोता दिन भर भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर-टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी-किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) तोता क्यों अधमरा हो गया?
(iv) तोते का कौन-सा दोष छूट नहीं पाया था?
(v) तोता अपनी चोंचों से क्या कर रहा था?

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा **रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन परिचय एवं साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख कीजिए।**

3. रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित कहानी 'तोता' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तोता स्वभाव से कैसा था?
2. टैगोर का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. टैगोर द्वारा रचित रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. टैगोर की रचनाओं की विषयवस्तु क्या है?
5. "टैगोर मानव-धर्म प्रेमी थे।" स्पष्ट कीजिए।
6. तोते को विद्वान् बनाने के लिए क्या किया गया?
7. तोता क्यों मर गया?

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. टैगोर ने शान्ति निकेतन में ललित कला स्कूल की स्थापना कब की?
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबल पुरस्कार कब मिला?
3. टैगोर को उनकी किस रचना पर नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ?
4. टैगोर को 'सर' की उपाधि से किसने सम्मानित किया?
5. टैगोर ने 'सर' की उपाधि कब वापस की?
6. 'गोरा' नामक उपन्यास के रचनाकार कौन हैं?
7. टैगोर द्वारा लिखित नाटकों का नामोल्लेख कीजिए।
8. टैगोर द्वारा लिखित कहानियों का नामोल्लेख कीजिए।
9. गीतांजलि का क्या अर्थ है?
10. तोते को शिक्षा देने का काम राजा ने किसे सौंपा?
11. पण्डितों के अनुसार किस तरह के आवास में विद्या नहीं आती?
12. पिंजरा किस धातु का बना था?
13. राजा ने किसके गले में सोने का हार डाल दिया?
14. तोता गाना गाना क्यों बन्द कर दिया?
15. राजा ने किसके कान उमेठने के लिए कहा?

● व्याकरण बोध

निम्नलिखित समस्त पदों का समास विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए—
कायदा-कानून, राजा-मण्डी, अविद्या।

● आन्तरिक मूल्यांकन

टैगोर द्वारा लिखी गयी किसी अन्य कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

●●●